जपुजी साहिब

१.५

ੴ

भाई चतर सिंह जीवन सिंह पुस्तकां वाले,
बाजार माई सेवां, अमृतसर

जपुजी साहिब

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु॥१॥ सोचै सोचि न होवई जे सोचीं लख वार ॥ चुपै चुपि न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस सिआणपा लख

होहि त इक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥ हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई॥हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई॥ हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि॥इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ॥ २ ॥ गावै को ताणु होवै किसै

ताणु ॥गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ गावै को गुण वडिआईआ चार ॥गावै को विदिआ विखमु वीचारु॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भउ

अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥ ४ ॥ थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥ नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥ गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ

भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ ५ ॥ तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख

सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥ जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइकै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥ ७॥ सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिऐ

धरति धवल आकास ॥ सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ८ ॥ सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥ सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥ सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥ सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥ सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिऐ

लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ १० ॥ सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥ सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ ११ ॥ मंने की गति कही न जाइ ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि कलम न लिखणहारु । मंने का बहि करनि वीचारु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १२ ॥
मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मंनै
सगल भवण की सुधि ॥ मंनै मुहि
चोटा ना खाइ ॥ मंनै जम कै साथि
न जाइ ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १३ ॥
मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥ मंनै पति
सिउ परगटु जाइ ॥ मंनै मगु न
चलै पंथु ॥ मंनै धरम सेती सनबंधु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ॥ जे को मंनि
जाणै मनि कोइ ॥ १४ ॥ मंनै पावहि
मोखु दुआरु ॥ मंनै परवारै साधारु ॥

मनै तरै तारै गुरु सिख ॥ मनै नानक भवहि न भिख ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥ १५ ॥ पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै

होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु
जोरु ॥ जीअ जाति रंगा के नाव ॥
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥
लेखा लिखिआ केता होइ ॥
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥
कीता पसाउ एको कवाउ ॥ तिसते
होए लख दरीआउ ॥ कुदरति
कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न
जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै
साई भली कार ॥ तू सदा सलामति

निरंकार ॥ १६ ॥ असंख जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग मनि रहहि उदास ॥ असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥ असंख सती असंख दातार ॥ असंख सूर मुह भख सार ॥ असंख मोनि लिव लाइ तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १७ ॥ असंख मूरख

अंध घोर ॥ असंख चोर हराम
खोर ॥ असंख अमर करि जाहि
जोर ॥ असंख गल वढ हतिआ
कमाहि ॥ असंख पापी पापु करि
जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े
फिराहि ॥ असंख मलेछ मलु भखि
खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि
भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥ जो
तुधु भावै साई भली कार ॥ तूं सदा
सलामति निरंकार ॥ १८ ॥ असंख

नाव असंख थाव ॥ अगम अगम

असंख लोअ ॥ असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआन गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥ १९ ॥ भरीऐ

हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ २० ॥ तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु॥सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ॥ अंतर गति तीरथि मलि

नाउ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ॥

विणु गुण कीते भगति न होइ ॥
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति
सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ कवणु सु वेला
वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु
॥ कवणि सि रुती माहु कवणु जितु
होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पंडती
जि होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न
पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु
कुराणु ॥ थिति वारु ना जोगी जाणै
रुति माहु ना कोई ॥ जा करता
सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥

किव करि आखा किव सालाही

किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक
आखणि सभु को आखै इकदू इकु
सिआणा॥वडासाहिबु वडीनाई कीता
जाका होवै॥ नानक जेको आपौ जाणै
अगै गइआ न सोहै ॥२१॥ पाताला
पाताललख आगोस आगास॥ ओड़क
ओड़क भालि थके वेद कहनि इक
वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा
असुलू इकु धातु॥लेखाहोइ त लिखीऐ
लेखै होइ विणासु ॥ नानक वडा
आखीऐआपे जाणै आपु।२२।सालाही

सालाहि एती सुरति न पाईआ नदीआ

अतै वाह पावहि समुंदि नजाणीअहि॥
समुंदसाह सुलतान गिरहा सेती मालु
धनु॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु
मनहु न वीसरहि॥२३॥ अंतु न सिफती
कहणि न अंतु॥ अंतु न करणै देणि
न अंतु॥ अंतु न वेखणि सुणणि न
अंतु॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु॥
अंतु न जापै कीता आकारु॥ अंतु न
जापै पारावारु॥ अंत कारणि केते
बिललाहि॥ ताके अंत न पाए जाहि॥
एहु अंतु न जाणै कोइ॥ बहुता कहीऐ
बहुता होइ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ॥

ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवडु
ऊचा होवै कोइ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै
सोइ॥जेवडु आपिजाणै आपि आपि॥
नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥
बहुता करमु लिखिआ ना जाइ॥ वडा
दाता तिलु न तमाइ ॥ केते मंगहि
जोध अपार॥ केतिआ गणत नही
वीचारु॥ केते खपि तुटहि वेकार॥केते
लै लै मुकरु पाहि॥ केते मूरख खाही
खाहि॥ केतिआ दूखभूख सद मार॥
एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि
खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि

न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ ॥ जिसनो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु ॥ २५ ॥ अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीए अमुल भंडार॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु

करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ आखि आखि रहै लिव लाइ॥ आखहि वेद पाठ पुराण॥ आखहि पड़े करहि वखि-आण॥ आखहि बरमे आखहि इंद ॥ आखहि गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि॥ एते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि

केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥
नानक जाणै साचा सोइ ॥ जे को आखै
बोलु विगाड़ ॥ ता लिखीऐ सिरि गावारा
गावारु ॥ २६ ॥ सो दरु केहा सो घरु केहा
जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद
अनेक असंखा केते वावण हारे ॥ केतै
राग परी सिउ कहीअनि केते गावण
हारे ॥ गावहि तुहनो पउणु पाणी
बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि
लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावहि
ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥

गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे॥गावनि जतीसता संतोखी गावहि वीर करारे ॥ गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥ गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे॥सेई तुधुनो गावहि जो तुध भावनि रते तेरे भगत

रमाले ॥ हारि कते गावनि सेमै निति

न आवनि नानक किआ वीचारे ॥
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा
साची नाई॥ हैभी होसी जाइ न जासी
रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती
करि करि जिनसी माइआ जिनि
उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा
जिव तिस दी वडिआई॥ जो तिसु भावै
सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक
रहणु रजाई ॥ २७ ॥ मुंदा संतोखु
सरमु पतु झोली धिआन की करहि

बिभूति ॥खिंथा कालु कुआरी काइआ
जुगति डंडा परतीति ॥ आई पंथी
सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु
अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु
॥२८॥ सुगति गिआनु दइआ भंडारणि
घटि घटि वाजहि नाद ॥ आपि नाथु
नाथी सभ जाकी रिधि सिधि अवरा
साद ॥संजोगु विजोगु दुइ कार चला-
वहि लेखे आवहि भाग॥ आदेसु तिसै
आदेसु॥आदिअनीलुअनादिअनाहति
जुगु जुग एको वेसु ॥२९॥ एका माई

जुगति विश्राइ तिनि चलै परवाणु ॥ इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु॥ श्रोहु वेखै श्रोना नदरि न श्रावै बहुता एहु विडाणु ॥ श्रादेसु तिसै श्रादेसु ॥ श्रादि श्रनीलु श्रनादि श्रनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥ श्रासणु लोइलोइ भंडार ॥ जो किछु पाइश्रा सु एकावार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ श्रादेसु तिसै श्रादेसु ॥ श्रादि श्रनीलु श्रनादि श्रनाहति जुगु

जुगु एको वेसु ॥३१॥ इकदू जीभौ लख
होहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु
लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु
जगदीस ॥ एतु राहि पति पवड़ीआ
चड़ीऐ होइ इकीस॥सुणिगला आकास
की कीटा आई रीस ॥ नानक नदरी
पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥ आखणि
जोरु चुपै नह जोरु ।' जोरु न मंगणि
देणि न जोरु॥ जोरु न जीवणि मरणि
नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि
सोरु॥जोरुन सुरती गिआनि वीचारि॥
जोरु न जुगती छुटै संसारु॥ जिसु हथि

जोरु करि वेखैसोइ॥ नानक उतमु नीचु

न कोइ ॥३३॥ राती रुती थिती वार॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥ तिसु
विचि धरती थापि रखी धरमसाल ॥
तिसु विचिजीअ जुगति के रंग॥तिनके
नाम अनेक अनंत॥करमी करमी होइ
वीचारु॥सचाआपि सचा दरबारु॥तिथै
सोहनि पंचपरवाणु॥नदरी करमि पवै
नीसाणु॥कचपकाई ओथैपाइ॥नानक
गइआजापैजाइ॥३४॥धरमखंडकाएहो
धरमु॥गिआन खंड का आखहुकरमु ॥
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान

महेस॥केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस॥ केते इंद चंद सूर केते केते मंडलदेस॥केते सिध बुधनाथ केते केते देवी वस ॥ केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद॥ केतीआसुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥ गिआन खंड महि गिआन परचंडु॥ तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥ सरम खंड की बाणी रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु

अनूपु ॥ ताकीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ जेको कहै पिछै पछुताइ ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधाकी सुधि॥३६॥ करम खंड की बाणी जोरु॥ तिथै होरु न कोई होरु॥तिथै जोध महाबल सूर॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ताके रूप न कथने जाहि॥नाओहि मरहि नठागे जाहि ॥ जिनकै रामु वसैमन माहि ॥ तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥ सचखंडि वसै

निरंकारु॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खंड मंडल वरभंड॥ जेको कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार॥वेखै विगसै करि वीचारु॥ नानक कथना करड़ा सारु॥३७॥ जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहिरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तप ताउ ॥भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि॥घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

सलोकु ॥

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु रात दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमुहदूरि॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

❁

सर्चलाइट प्रिंटिंग प्रेस, अमृतसर

हिन्दी

धार्मि

१. आदि बीड़ श्री गु
अक्षर हिन्दी बड़ी
२. बड़ी जन्म साखी
३. सुन्दर गुटका सटी
४. नितनेम सटीक
५. सुखमनी साहिब स
६. मुकम्मल जीवन
७. शलोक महला ९ सटीक १-००
८. सुख-सागर बड़ा २०-००
९. जीवन गुरु नानक देव जी ७-००
१०. „ „ गोबिंद सिंह जी ७-००
११. „ „ तेग बहादर साहिब जी ५-०

मिलने का पता–

भाई चतर सिंह जीवन सिंह

पुस्तकां वाले बाजार माई सेवां, अमृतसर